

कविता शिक्षण और उसकी विभिन्न विधियाँ

-डॉ. सलमा

शोध सारांश :-

किसी भी प्रकार के शिक्षण के समान कविता शिक्षण के द्वारा भी विद्यार्थियों के भाषा ज्ञान तथा अन्य प्रकार के ज्ञान में वृद्धि होती है। यदि कविता भाषा का भाव-तत्त्व एवं कला तत्त्व दोनों शक्तिशाली हो तो उसका हृदय पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। कविता के शिक्षण से बालकों में अपने धर्म, देश, जाति, मानवता तथा अन्य नैतिक धारणाओं के प्रति अनुकूल अभिवृत्तियों के निर्माण करने में बहुत सहायता मिलती है। कविता का शिक्षण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि छात्र उसका अर्थ एवं भाव दोनों समझ सकें। इसके अतिरिक्त कविता के शिक्षण द्वारा छात्रों को कविता के रस, आनन्द तथा यदि हो सके तो, परम आनन्द की अनुभूति भी करायी जानी चाहिए। छात्रों को जिन विषयों पर लिखी हुई कविताएँ पढ़ाई जाती हैं उसी के अनुरूप भावों व विचारों का निर्माण होता है।

बीज शब्द :- कविता शिक्षण, साहित्यिक विधा, सौन्दर्यबोध, पाठ्यक्रम, शिक्षणविधियाँ, अभिनय, समीक्षा, गीत आदि

शोध प्रविधि:- शोध की विश्लेषणात्मक पद्धति के साथ-साथ सामाजिक आलोचना आदि का प्रयोग।

शोध आलेख :-

कविता का स्वरूप :- साहित्यिक रचनाओं को काव्य और उनके रचनाकर्ताओं को कवि कहा जाता था। कविता का शाब्दिक अर्थ है काव्यात्मक रचना या कवि की कृति, जो छन्दों की शृंखलाओं में विधिवत बांधी जाती है। कविता लिखते समय जिस भाव के साथ लिखी जाती है, यदि पढ़ने वाला भी उसे उसी अर्थ और भाव के साथ समझ सके तो कविता लिखने का उद्देश्य सार्थक हो जाता है। कविता एक भावनात्मक प्रतिक्रिया पैदा करने के लिए ध्वनि, अर्थ और तालबद्ध भाषा विकल्पों के माध्यम से व्यक्त अनुभव के बारे में एक कल्पनाशील जागरूकता है। असाधारण तथ्य और कथ्य का साक्षात्कार करने वाला कवि कहलाता है। किन्तु बाद में साहित्य के विस्तार होने पर उसके गुण-धर्मों व विधाओं के मुल्यांकन और मानकीकरण के लिए विशेष शास्त्रों की रचना हुई। काव्य को गद्य अर्थात् वाक्यबद्ध, पद्य अर्थात् छन्दोबद्ध और चम्पू अर्थात् गद्य तथा पद्य के मिश्रण के रूप में तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है।

काव्य वह वाक्य रचना है जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो अर्थात् वह जिसमें चुने हुए शब्दों द्वारा कल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है। कविता शब्द नहीं, भाव का विषय है। इसलिए

उसकी यथारूप परिभाषा असम्भव है। काव्य का सृजन और अनुशीलन कभी भी इच्छाधीन और सायास नहीं होता। काव्य जल की शीतलता है, काव्य वसन्त की बयार है, अग्नि का उत्ताप है, पृथ्वी की गन्ध है और निःशब्द का संगीत है। इसलिए उसे बूझना और समझना नितान्त कठिन है। वह क्रान्तदर्शियों, सहृदयों और आत्मवेत्ताओं का विषय है।

अतः कविता हमारी भावनाओं का आधार तथा उद्दीपक है, वह हमारे भावों को उत्कण्ठित करती है, हृदय को रस तथा आनन्द से आपूरित करती है, सहृदयता और सौन्दर्यबोध का विकास करती है और व्यक्ति को कर्मठ, जागृत और मन्त्रमुग्ध करती है।

कविता शिक्षण की उपयोगिता

हिन्दी शिक्षण के कौशल, ज्ञान, रूचि तथा अभिवृत्त्यात्मक उद्देश्यों की पूर्ति किसी एक साहित्यिक विधा के माध्यम से नहीं की जा सकती। भाषा कौशलों के विकास, अभ्यास और व्यवहार के लिए भी साहित्य के सभी रूपों गद्य, पद्य, चम्पू और उनकी विविध विधाओं जैसे कहानी, नाटक, जीवनी व दोहा, सोरठा, चौपाई इत्यादि का अनुशीलन मुख्य है।

गद्य साहित्य की विशेषता सूचना, तथ्यों, जानकारियों व घटनाओं की सिलसिलेवार और यथार्थ प्रस्तुति है जबकि सौन्दर्य, करुणा, वीरता, हास्य आदि भावों के परिचय के लिए काव्य का आश्रय उपयोगी होता है। हमारा समाज जीवन के सभी अवसरों पर रागात्मक अभिव्यक्तियों का अभ्यस्त है। विद्यालय को इससे अलग नहीं रखा जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में काव्य रचनाओं का समावेश, व्यक्ति की रागात्मक आवश्यकताओं को तृप्ति करता है और उसे भावात्मक अनुभूतियों से परिचित कराता है। काव्य के समावेश से पाठ्यक्रम सभी आयामों में परिपूर्ण हो जाता है।

कविता शिक्षण के उद्देश्य:-

शिक्षण एक कला है। व्यापक अर्थ में शिक्षण व्यक्ति के जीवन में निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। बालक प्रत्येक व्यक्ति से कुछ न कुछ सीखता है किन्तु शिक्षण का उद्देश्य बालकों को किसी विषय का ज्ञान देना मात्र ही नहीं है, शिक्षण के और कई उद्देश्य भी होते हैं। भारत ही नहीं विश्वभर के समस्त विद्यालयों में कविता शिक्षण का महत्वसोपान है। पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण की शुरुआत कविता के माध्यम से ही होती है। ऐसा होने पर भी स्तर या कक्षा के अनुसार में कविता शिक्षण के उद्देश्य और प्रक्रिया में परिवर्तन होता जाता है। यही कारण है कि पूर्व-प्राथमिक स्तर के बाद पाठ्यक्रम में कविता-काव्य का अनुपात क्रमशः घटता जाता है।

कविता शिक्षण के सामान्य उद्देश्य –

- छात्रों की कविता में रूचि उत्पन्न करना।
- छात्रों की कल्पनाशक्ति का विकास कर उन्हें सृजन के क्षेत्र में लगाना।
- उचित भाव , छन्दलय , गति , -ताल-आरोह , अवरोह तथा विरामपूर्वककाव्यपाठ करने योग्य बनाना।
- काव्यगत शब्दसौन्दर्य का अनुभव कराना तथा उनके अनु-सौन्दर्य और भाव-भूति के क्षेत्र का विस्तार करना।
- कविता के तत्त्वों के प्रकाश में उनके विश्लेषण और मूल्यांकन में सक्षम बनाना।
- काव्य के अनुशीलन द्वारा पद्य साहित्य की समीक्षा व आलोचना में सक्षम बनाना।
- देशदर्शन-धर्म , समाज- , सभ्यतासंस्कृति से परिचित कराना-।
- विभिन्न काव्य शैलियों से परिचित कराना।
- काव्य के सृजन हेतु उत्सुकयोग्य और निपुण नाना ,।

कविता शिक्षण की विधियाँ

गीत विधि :- छन्द, लय -ताल और भावपूर्ण प्रस्तुति= कविता का प्राणतत्त्व है। काव्य की परिभाषा में भी कविता को रमणीय, रसपूर्ण और रागात्मक कहा गया है। यद्यपि आधुनिक कविता या नई कविता छन्दपरम्परिकछन्द परम्परा से विचलित है किन्तु उसका प्रस्तुतिकरण भी गद्य की भांति सपाट न होकर लयबद्ध और रागात्मक होता है। इस प्रकार गीतपूर्ण प्रस्तुति कविता का स्वाभाविक लक्षण है।

गीत विधि के माध्यम से कविता शिक्षण में छन्द, लय-ताल, यती-गति और विराम के समुचित व्यवहार से कविता का भाव स्पष्ट किया जाता है। छन्द और लय-ताल यद्यपि कविता के महत्वपूर्ण घटक माने जाते हैं किन्तु उन्हें काव्य का सर्वस्व नहीं कहा जाता है। गेयता के अतिरिक्त विषय, भाव और छन्द को प्राथमिकता देने से विद्यार्थी कविता के बाह्यपक्ष अर्थात्गेयता से तो परिचित हो जाते हैं किन्तु अर्थबोध, आनन्दबोध और भावबोध का आस्वाद नहीं कर पाते। इस कविता-शिक्षण का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो पाता।

अभिनय विधि

कविता शिक्षण के सन्दर्भ में अभिनय विधि का तात्पर्य-वर्ण्य विषय के अनुरूप अंग-संचालन करके कविता का भाव स्पष्ट करने का प्रयास करना है। इस प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षक कविता-पाठ के साथ ही उसमें

निहित भावों के अनुरूप अंग संचालन करता है। विद्यार्थी इन संकेतों के माध्यम से कविता का भाव ग्रहण करने का प्रयास करते हैं।

अभिनय द्वारा मनोभावों का प्रकाशन नाट्य का विषय है। प्रशिक्षित और निपुण कलाकार अंग-संचालन और हाव-भाव के प्रदर्शन द्वारा मनोभावों का सुरुचिपूर्ण प्रदर्शन करते हैं। किन्तु कक्षा में शिक्षण के दौरान शिक्षक से ऐसी अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह सब प्रकार की कविताओं के भाव स्पष्ट करने के लिए अपेक्षित नाट्य कला का प्रदर्शन करे। यदि ऐसा हुआ तो कक्षा शिक्षण का स्थान न होकर नृत्यशाला हो जाएगी। इसीलिए अभिनय के माध्यम से कविता के भाव-प्रकाशन का कार्य प्रारम्भिक कक्षाओं के अभिनय प्रधान बालगीतों के शिक्षण तक ही सीमित रखा जाना चाहिए।

व्याख्या विधि

व्याख्या का तात्पर्य है कविता के अन्तर्गत प्रयुक्त पदों अथवा चरणों में निबद्ध भावों का स्पष्टीकरण। इस प्रक्रिया में प्रसंगों, बोध-कथाओं, मतों, सोद्धान्तों उदाहरणों और दृष्टान्तों के प्रस्तुतिकरण से कथ्य को सुबोध बनाया जाता है। व्याख्या विधि द्वारा कविता के रसास्वादन के साथ ही अर्थ, भाव और आनन्दानुभव इत्यादि सभी पक्षों का आस्वादन सुनिश्चित किया जाता है। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी काव्य-पाठ की विधि, दुर्बोध प्रसंगों की व्याख्या, कठिन शब्दों के अर्थ, रस और अलंकार जैसे काव्यतत्वों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, जिससे काव्य के आन्तरिक तथा बाह्य सभी पक्षों का ज्ञान सुनिश्चित होता है।

शब्दार्थ कथन विधि

अर्थकथन विधि के अन्तर्गत शिक्षण कविता के दौरान शिक्षक कविता में प्रयुक्त कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करता है। कविता के माध्यम से भाव-संयोजन करते हुए कवि उपयुक्त और कथ्य के अनुरूप शब्दों का प्रयोग करता है। इसमें से कुछ सन्धिपद, समस्तपद, परिभाषिक शब्द और कुछ देसी शब्द हो सकते हैं जिनका व्यवहार विद्यार्थियों के दैनिक जीवन में नहीं हो पाता। ऐसे शब्द सामान्य विद्यार्थी के लिए कविता के भाव बोध में बाधक हो सकते हैं। भाव-बोध के माध्यम से ही विद्यार्थी कविता के रस और आनन्द का अनुभव करते हैं। आजकल अधिकांश भाषा-शिक्षक कविता शिक्षण के लिए इसी विधि का आश्रय लेते हैं।

समीक्षा विधि

इस विधि में कविता के सभी पक्षों का काव्य शास्त्र की दृष्टि से मूल्यांकन करना होता है। इस प्रक्रिया में सर्वप्रथम कविता का पाठ, उसका सरलार्थ और भाव का प्रयास किया जाता है। शिक्षक प्रश्नोत्तर के माध्यम से कवि की

समीक्षा करता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक छात्रों को उस कवि के द्वारा रचित कविताओं की समीक्षा करने की ओर बल देता है। इस प्रक्रिया से न केवल कविता के प्राण तत्त्व के परिचय में सहायता होती है अपितु उसके सम्पूर्ण रसास्वादन में भी सरलता होती है।

निष्कर्ष :- अतः कहा जा सकता है कि जिस ढंग से शिक्षक शिक्षार्थी को ज्ञान प्रदान करता है उसे शिक्षण विधि कहते हैं। शिक्षण विधि पद का प्रयोग बड़े व्यापक अर्थ में होता है। एक ओर तो इसके अंतर्गत अनेक प्रणालियाँ एवं योजनाएँ सम्मिलित की जाती हैं, दूसरी ओर शिक्षण की बहुत सी प्रक्रियाएँ भी सम्मिलित कर ली जाती हैं।

-डॉ. सलमा असलम

हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्विद्यालय,

श्रीनगर, कश्मीर

फोन न. :- 9682162934

ईमेल salmaaslam59@yahoo.com